VAAGDHARA

वातें वागधारा नी

अगस्त, 2023

अंक 39

VAAGDHARA

तीन वर्ष पुर्ण होने पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

प्यारे किसान , भाइयों - बहनों,

मेरे स्वराज साथियो, प्यारे बच्चों जय गुरु !

आप सभी को दिवासा एवं रक्षा बंधन कि ढेरों शुभकामनायें !!

आप सभी को दिवासा (हरियाली अमावस्या) की बहुत-बहुत शुभकामनाएं, वैसे तो इसे पहला त्यौहार कहा जाता है और यह सबसे बड़ा त्यौहार भी माना गया है | हमारे क्षेत्र में हमारे लिए तो यह माना जाता है कि दिवाली से बड़ा दिवासा होता हैं अगर दिवासा अच्छा नही हुआ, तो दिवाली भी नही हो सकती | इसी माह रक्षा बंधन का त्यौहार भी है जो कि रक्षा कि शपथ दिलाता है | दिवासा का अपने आप में एक महत्व है | हमारी प्रकृति का संदेश है वर्षा ऋतु का पहला त्यौहार दिवासा, कि हम किस प्रकार से प्रकृति को जियें,प्रकृति के साथ जियें, प्रकृति के लिए जियें | इसी माह रक्षाबंधन का त्यौहार भी है इस अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाओं सहित उम्मीद व आशा है कि हमारे जलाशय, पक्षी, जीव-जंतु, पादप, मिट्टी के अंदर तथा बाहर रहने वाले छोटे जीवाणु, और बहुत सारे ऐसे पेड़-पौधे हैं जो बिना उगाये उगते है, ये हमारे पोषण को सुरक्षा देते है जैसे : पुआड़,रंजन,ढीमड़ा,लूणीया,कलिंजरा, बोकना, काचरी व किकोड़ा जिनको उगाया नही जाता, परन्तु हमारे खाने का हिस्सा है ऐसे सभी पादपो का संरक्षण हो| मैं आप सभी को यही शुभकामनाएं देना चाहता हूं|

प्रकृति हमारे साथ होती है| हमें नहीं भूलना चाहिए इस त्यौहार को मनाने में, इसके लिए हमें किसी बाहरी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती | हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को समझाएं कि दिवासे का महत्व क्या है? क्या महत्व है रक्षा बंधन का? हरियाली के पर्व की शुरुआत इस माह में होती है और कई लोग वृक्षारोपण करके इतिश्री कर लेते हैं फिर उसके बाद उन वृक्षों का क्या होता है ? कोई भी नहीं देखता, परंतु आप अंदाज लगाइये, सोचिए कि अगर किसी बच्चे पर माता-पिता ध्यान देना छोड़ दे तो उस बच्चे कि क्या स्तिथि होंगी, वह कैसे जी पायेगा बिना भोजन ,शिक्षा व जीवन के, तो हमें भी इस बात को हमारे पेड़-पौधों के साथ जोड़कर भी सोचना चाहिए, भले ही आप 50 पेड़ मत लगाइये, आप पांच पेड़ लगाये या एक पेड़ लगाये पर उसे अपने बच्चे कि तरह देखरेख करे, अगर भविष्य में बच्चे वृद्ध माता-पिता का ध्यान रखना छोड़ देते हैं लेकिन वृक्ष नही छोड़ते और वह केवल आपका ही नही, समाज व प्रकृति से जो लिया उसे पुनः लौटा देते है |

पिछले अंको में हर बार की तरह अलग-अलग विषयों पर बात करता रहा हूं जिनमे हमसे जुड़े हुए बीज, मृदा, पोषण और कई सारे विषयों पर चर्चा होती रही है, परंतु मैं फिर कहना चाहता हूं कि मिट्टी बहुत मुश्किल से बनती है| वर्षो लग जाते है उसको बनने में| हमारे क्षेत्र में बारिश बहुत तेज गति से आती है और तेज गति से बहकर के पानी चला जाता है उस पानी के साथ हमारे खेत,पहाड़ी टीलों की मिट्टी बहकर के चली जाती है | मेरा आग्रह है की अपने खेत कि मेड को देखें और समय रहते बांधे | मिट्टी हमारा सोना है, वही हमारी सुरक्षा है, वही हमारी रक्षा है, उसको बांध करके रखें| जो पादप इस बरसात में उगेंगे उसे अपने बच्चों को बताएं क्या है? इससे कौनसी बीमारी का इलाज होता है, खाने में क्या काम आता है, उसकी क्या-क्या सब्जी बनती है, किस प्रकार से बनती है और अगर हमें पता नहीं चलता किसी वनस्पति के बारे में तो गांव के बुजुर्गो से, परिवार के बड़े बुजर्गो से पूछे| संस्था को भी खुशी होगी, हमें भी प्रसन्नता होगी अगर हम अपने गांव का विविधता भरा मानचित्र (डाइवर्सिटी मैप) बना करके गांव में लगा पाए| आपको प्रकृति से भरे इस माह के लिए बहुत सारी शुभकामनाएं मैं आशा करता हूं कि आप सभी लोग प्रकृति के साथ ही हमारा आदिवासी अंचल के दायित्व को समझेंगे और इस प्रकृति के संवाद को बच्चो, युवाओं व आने वाली पीढ़ियो के साथ- साथ ही प्रशासन तक पहुंचाएंगे और अपनी जिम्मेदारी को निभाएंगे |

धन्यवाद

जय- हिंद, जय- स्वराज !!!

आपका अपना

जयेश जोशी

पशुधन स्वराज : पशुओं में रोग प्रबन्धन

किसान भाइयों जैसा हम जानते है कि खेती के साथ पशुपालन हमारी आजीविका व जीवनशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा है । वर्षा ऋतु आते ही प्रकृति में नए रंग आ जाते है, साथ ही जीव जगत में कई जीवाणु और विषाणु जन्म लेते है, जिनमें से कई जीव लाभदायक होते है तो कई जीव नुकसान भी पहुंचाते है । जिस प्रकार से मनुष्य अपना स्वयं का और अपनी फसलों का ध्यान रखते है, उसी प्रकार अपने बेजुबान पशुओं का ख्याल रखना भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है ।

तकनिकी विकास के इस दौर में जहाँ एक तरफ किसान पशुधन को सिमित करते जा रहा है,वही दूसरी तरफ आदिवासी अंचल में आज भी पशुधन आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है । आदिवासी संस्कृति में सामाजिक व स्थानीय परम्पराओं को ध्यान में रख कर, आज भी पशुधन को अपने परिवार का हिस्सा मानते है, कई त्योहारों में पशुधन का आज भी महत्वपूर्ण स्थान है। सीमित चारागाह भूमि और संसाधन होने के कारण आदिवासी अंचल में बड़े पशुओं को कम करके छोटे पशुओं (बकरी, भेड़ एवं मुर्गी) को ज्यादा महत्व दिया जाता है, जैसा कि खेती के साथ-साथ पशुपालन हमारी आजीविका का महवपूर्ण हिस्सा है, इसलिए उनका प्रबंधन और ख्याल रखना भी हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है ।

तो आईये हम पशुओं में रोग प्रबंधन के बारे में जानते है -

पशुओं में रोग प्रबंधन से पहले हमें "उपचार" और "रोकथाम" के बारे में जानना जरुरी है बीमारी होने के बाद दवाइयों से जो इलाज किया जाता है उसे "उपचार" कहते है । संक्रामक बीमारी न फैले उसके बचाव हेतु जो टीकाकरण किया जाता है उसे "रोकथाम" कहते है ।

---जाने हमारा पशु स्वस्थ है या बीमार ---

स्वस्थ पशु के लक्षण -

- आँखे चमकीली और चोकन्नी,कान खड़े और त्वचा चमकदार होती है ।
- सामान्य खान-पान और जुगाली करते है ।
- शरीर का तापमान सामान्य व सांस लेने की गति सामान्य होती है I
- मल (गोबर) साधारण सख्त और ढीला होता है ।
- मूत्र साफ रंग,तलछट नहीं जमने वाला होता है ।
- स्वस्थ पशु हमेशा झुण्ड में रहता है और फुर्तीला होता है ।

बीमार पशु के लक्षण -

- पशु सुस्त, उदास, बाल शुष्क-खड़े, चमड़ी सख्त और कान लटके होते है ।
- खाना-पीना और जुगाली अनियमित रूप से या फिर कम कर देता है ।
- आँख और मुंह से पानी गिरने लगता है ।
- वजन में तेजी से कमी और उत्पादकता में कमी आ जाती है ।
- शरीर के तापमान में बढोतरी (बुखार) तथा सांस लेने की गति बहुत तेज या धीमी हो जाती है ।
- गोबर पतला या फिर कभी- कभी खून युक्त होता है और तेज दुर्गन्ध आती है ।
- मूत्र बदरंग एवं अधिक अनियंत्रित मात्रा में आता है ।
- बीमार पशु झुण्ड में सबसे पीछे या फिर अलग रहता है ।

पशुओं में प्रमुख संक्रामक रोग

1. खुर पका - मुंह पका रोग

यह मुख्यतः बकरी, गाय एवं भैस में होने वाला विषाणु जनित, अत्यन्त संक्रामक, छूतदार एवं अतिव्यापी रोग है। छोटी उम्र के पशुओं में यह रोग जानलेवा भी हो सकता है। शंकर नस्ल के पशुओं में यह रोग अत्यन्त तीव्रता से फैलता है। इस रोग में मृत्युदर तो कम है, लेकिन दुधारू पशुओं का दुग्ध उत्पादन बहुत कम हो जाता है। इस रोग का फैलाव पशुपालक को अत्यधिक आर्थिक हानि पहुँचाता है।

रोग के लक्षण

- 105-107° फॉरेनहाइट तक तेज बुखार।
- मुँह, मसूड़े व जीभ पर छाले, लगातार लार का गिरना ।
- पैरों में खुरों के बीच छाले जिससे पशु का लंगडाना।
- पैर के छालों में जख्म एवं कीड़े पड़ना।
- दुधारू पशु के थनों एवं गादी में छाले पड़ने से थनैला रोग।
- कुछ पशुओं में हांफने की बीमारी होना।
- दुधारू पशुओं में दूध के उत्पादन में एकदम कमी।

रोग का उपचार

- मुँह एवं खुर के घावों की प्रतिदिन सुबह-शाम फिटकरी या लाल दवा के हल्के घोल से सफाई करें।
- घाव में कीड़े पड़ने पर फिनाइल तथा मीठे तेल की बराबर मात्रा मिलाकर उपयोग करें।
- उपरोक्त सब उपलब्ध न होने पर नीम के पत्ते उबालकर ठंडे किये पानी से जख्म साफ करें।
- विषाणुओं द्वारा उत्पन्न रोगों का सही इलाज अभी तक नहीं खोजा जा सका है। अतः बचाव ही उपचार है।
- इस रोग से पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने से अन्य रोगों के बचाव हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार करावें।

रोग की रोकथाम व बचाव

- यह रोग महामारी के रूप में फैलता है अतः रोगी पशु को स्वस्थ पशु से तुरन्त अलग करें।
- पशुओं में प्रतिवर्ष नियमित रूप से टीकाकरण करावें।
- पशु को बांधकर रखें व घूमने-फिरने न दें और बीमार पशु के खाने-पीने का प्रबंध अलग ही करें।
- रोगी पशुओं को नदी, तालाब, नहर आदि में पानी न पीने देवें।
- पशु को सूखे स्थान पर बांधे, गंदी जगह पर नहीं।
- रोगी पशु को सम्भालने वाले व्यक्ति को बाड़े से बाहर आने पर हाथ-पैर साबुन से अच्छी तरह से धो लेने चाहिये।
- रोग की सूचना तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सालय में देवें।
- जहां-जहां पशु की लार आदि गिरती है, वहां पर कपड़े धोने का सोडा / चूना इत्यादि डालते रहें, यदि संभव हो तो फिनाइल से धोना भी लाभप्रद होता है।

2. गलघोंटू (घुर्रका रोग)

गलघोंटू मुख्यतः बकरी, भेड़, गाय, भैंस जाति के पशुओं में होने वाली अतिव्यापी छूने से फैलने वाली बीमारी है। यह एक जीवाणु जनित रोग है यह बीमारी उन स्थानों पर अधिक होती है, जहाँ बारिश का पानी इकट्ठा हो जाता है। इस रोग के जीवाणु अस्वच्छ स्थान पर रखे जाने वाले पशुओं तथा लम्बी यात्रा अथवा अधिक कार्य करने से थके पशुओं पर शीघ्र आक्रमण करते हैं।

रोग का फैलाव

- रोगी पशु के झुठे चारे, दाने एवं पानी के सेवन से।
- रोगी पशु की बिछावन के सम्पर्क में आने से
- रोगी मादा पशु के दूध से।
- हवा के माध्यम से।

रोग के लक्षण

- 105-106° फॉरेनहाइट तक तेज बुखार ।
- आंखें लाल एवं सूजी हुई।

- नाक, आंख एवं मुँह से स्त्राव
- गर्दन, सिर या आगे की दोनों टांगों के बीच सूजन ।
- सांस लेते समय घुर्र-घुर्र की आवाज का होना ।
- सांस लेने में कठिनाई के कारण दम घुटने से पशु की मृत्यु ।

रोग का उपचार एवं बचाव के उपाय :-

- निकटतम पशु चिकित्सालय में रोग की सूचना देवें एवं रोगी पशु का तुरन्त उपचार करायें, अन्यथा पशु की मृत्यु संभव है।
- प्रतिवर्ष मानसून पूर्व गलघोंटू रोग का टीका निकटतम पशु चिकित्सा संस्था से अवश्य लगवाएँ।
- पशु को लम्बी यात्रा से पूर्व भी टीका अवश्य लगवाएँ।
- रोग के लक्षण देखते ही रोगी पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर देवें।
- रोगी पशु को नदी, तालाब, पोखर आदि में पानी न पीने दें।
- स्वस्थ पशुओं को चारा, दाना, पानी आदि रोगी पशु से पहले देवें।
- बीमारी से मृत पशु के शव का निस्तारण वैज्ञानिक तरीके से गहरा गड्ढा खोदकर नमक / चूना डालकर अथवा जलाकर करें।

3. लंगड़ा बुखार (फड्सूजन)

यह बकरी, गाय, भैंस, भेड़ में वर्षा ऋतु में होने वाला एक जीवाणु जनित छूने से फैलने वाला संक्रामक रोग है। इसमें शरीर के मांसल भाग विशेष रूप से पुट्ठों पर गैस भरी सूजन आ जाने से पशु लंगड़ाने लगता है।

रोग का फैलाव

- खुले घाव या खरोंच द्वारा भी जीवाणु शरीर में प्रवेश कर रोग उत्पन्न करता है।
- इस रोग के जीवाणु के बीजाणु प्रतिकूल परिस्थितियों में भी काफी समय तक जीवित रहकर रोग फैलाते रहते है।

रोग के लक्षण

- 105-107° फॉरेनहाइट तक तेज बुखार, खाना पीना एवं जुगाली बंद कर देना।

- पुट्ठे पर गर्म सूजन, जो बाद में ठंडी हो जाती है।
- सूजन को दबाने पर गैस भरी होने से चट-चट की आवाज होती है।
- पशु का पहले लंगड़ाना एवं बाद में चलने-फिरने में पूर्णतया असमर्थ हो जाना।

रोग का उपचार एवं बचाव के उपाय

- निकटतम पशु
- चिकित्सालय को रोग की सूचना देवें एवं रोगी पशु का तुरन्त इलाज करायें।
- रोगी पशु को नदी, तालाब, पोखर आदि में पानी न पीने दें।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग करें, स्वस्थ पशुओं को दाना-पानी आदि पहले देवें।
- रोग से मृत पशु को गांव के बाहर लगभग 1.5 मीटर गहरे गड्ढे में चूने या नमक के साथ दबा दें।

4. फड़किया रोग (एन्टेरोटॉक्सिमिया)

फड़किया भेड़ व बकरियों में होने वाली एक प्रमुख बीमारी है यह बीमारी स्वस्थ भेड़ व बकरियों में मुख्यतया जुलाई-अगस्त माह में होती है। यह बीमारी हर उम्र की भेड़ व बकरियों में प्राणघातक रोग के रूप में होती है।

रोग के कारण

- यह बीमारी एक जीवाणु से होती है यह रोग भेड़-बकरी की प्रत्येक नस्ल, आयु तथा लिंग के पशु को प्रभावित करता है।
- अधिक प्रोटीन युक्त खुराक लेने अथवा ताजी फसल कटे हुए खेतों में चराने से यह बीमारी अधिक होती है।
- सरसों व चने की कटाई के तुरंत बाद खाली खेतों में बकरियों / भेड़ों को चराना सबसे अधिक हानिकारक होता है। टूटी हुई सरसों / चने की फलियां बकरियां अधिक खा लेती हैं, जिससे प्रोटीन युक्त खुराक बढ़ जाती है।
- यह रोग पोषक / अधिक प्रोटीनयुक्त खुराक के प्रारंभ करने के 15-20 दिन बाद में होता है।
- अन्तः परजीवियों का अधिक संक्रमण भी रोग जनन में सहायक होता है।

रोग के लक्षण

- पेट में तीव्र दर्द होने के कारण पीड़ित भेड/ बकरी बेचैन होकर उछलने कूदने लगती है।
- रोगी पशु के आफरा आ जाता है। रोगी पशु की मांसपेशियों में खिचाव एवं सिर को दीवार या खंभे से टकराती है।
- फड़किया रोग के जीवाणु से उत्पन्न आंत्र आविषाक्तता से बड़ी संख्या में पशु प्रातःकाल मरे मिलते हैं।
- रेवड़ का सबसे स्वस्थ मेमना पहले प्रभावित होता है।
- इस अवस्था में छेड़ देने पर रोगी जमीन पर गिर जाता है और उसकी टांगें एवं सिर खिच जाते हैं।
- आंखें चौकन्नी नजर आती है तथा मुंह से झाग निकलता है।
- पशु जल्दी जल्दी सांस लेता है और मांसपेशियों में फड़कन होती रहती है।
- कुछ पशुओं में दस्त लगते हैं।
- उत्तेजना के दौरान शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है।
- अन्तिम अवस्था में अर्द्ध मूच्छिंत होकर पड़ जाता है तथा लेटे-लेटे साइकिल चलाने की तरह रोगी पशु की टांगें चलती रहती है।
- इन लक्षणों के प्रकट होने के 2-3 घंटे में पशु की मृत्यु हो जाती है।

रोग का उपचार एवं बचाव के उपाय

बीमारी के लक्षण प्रकट होने के बाद इस बीमारी में औषधियों का विशेष असर नहीं होता, अतः रोग से बचाव हेतु निम्न उपाय अपनाने चाहिए :-

- अधिक प्रोटीन युक्त चारा कम मात्रा में खिलाना चाहिए।
- ताजी फसल कटे खेतों में पशुओं को कम समय तक चराना चाहिए।
- जिन क्षेत्रों में बीमारी का प्रकोप बढ़ रहा हो उन क्षेत्रों में चराने के घंटों (समय) में कमी कर देनी।
- चाहिए। शाम को बाड़े में बन्द करते समय प्रत्येक भेड़, बकरी का निरीक्षण कर लेना चाहिए। यदि किसी भेड़ या बकरी का पेट फूला हुआ लगे तो 10-20 ग्राम मीठा सोडा देना चाहिए।
- प्रकोप के दिनों में रात के समय में भी एक दो बार झुण्ड का निरीक्षण करना अच्छा रहता है।
- इस रोग से भेड़-बकरियों को बचाने हेतु प्रतिवर्ष फरवरी-मार्च या जुलाई माह में टीका अवश्य लगवाना चाहिए।
- यह टीके प्रसव के 2-4 सप्ताह पहले लगाने से मादा के साथ-साथ नवजात में भी रोग से बचाव की शक्ति आ जाती है।

"बचाव का सर्वोत्तम उपाय समय पर टीका लगवाना ही है
तीन माह से कम उम्र के पशुओं के बच्चे को टीका नहीं लगायें"

5. थनैला रोग

यह मादा पशुओं में जीवाणु, विषाणु, फफूंद अथवा माइकोप्लाज्मा से होने वाला रोग है। यह रोग अतितीव्र, तीव्र, कम तीव्र या दीर्घकालीन होता है। यह रोग दुधारू पशुओं में वर्ष में किसी भी समय एवं ब्यात की किसी भी अवस्था में हो सकता है। यह रोग मुख्यतः अयन अथवा थन में चोट लगने, पशुशाला में अस्वच्छता, थन के घाव में संक्रमण, ग्वाले द्वारा गलत तरीके से दुग्ध दोहने या पशु विक्रय करते समय उसका दुग्ध उत्पादन अधिक दिखाने हेतु थनों में अधिक समय तक दूध रोके रखने से, बछड़े द्वारा दूध पीते समय पहुंचाई गई चोट एवं तारबन्दी के घाव आदि से होता है। इस रोग से पशुपालक को अत्यधिक आर्थिक हानि होती है।

रोग का फैलाव

- पशु एवं पशु आवास की अस्वच्छता से रोग फैल सकता है।
- ग्वाले के हाथ व कपड़ों की अस्वच्छता से ।
- संक्रमित पशु के दूध के उपयोग अथवा सम्पर्क में आने से

रोग के लक्षण

- अयन अथवा थन में सूजन, कड़ापन एवं दर्द।
- अयन या थनों को छूने पर गर्म व पीड़ादायी ।
- विकारग्रस्त थन से पानी जैसा, फटे दूध की तरह या दही की तरह जमा दूध निकलना ।
- कभी-कभी खून मिला या थक्के युक्त दूध निकलना ।
- दूध की मात्रा में कमी एवं दुर्गन्ध आना।
- पशु का खाना पीना कम होना।
- दूध का रंग मटमैला, पीला, गुलाबी या हरा होना।
- कभी-कभी थनों में गांठे पड़ना एवं रोगग्रस्त थन का सिकुड़ जाना अथवा छोटा हो जाना ।

रोग का उपचार एवं बचाव के उपाय

- पशु चिकित्सक से तुरन्त परामर्श करके रोग का इलाज करावें।
- पशु शाला को प्रतिदिन दो बार डिटरजेन्ट या फिनाइल के पानी से धोना चाहिए।
- दूध दोहने वाले वाले के हाथ स्वच्छ होने चाहिए।
- दूध साफ सुथरे थन से साफ स्थान एवं साफ पात्र में निकालना चाहिए।
- दूध दुहने से पहले व बाद में थनों को हलके लाल दवा के घोल से धोवें।
- रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- स्वस्थ पशुओं को दोहने के बाद रोगी पशु को दोहना चाहिए।
- रोगी पशु का दूध पशुओं तथा मनुष्यों द्वारा उपयोग में नहीं लिया जाना चाहिए।
- यह रोग जन स्वास्थ्य से संबंधित एवं पशुपालकों की आय को प्रभावित करने वाला होने के कारण पशुपालकों को इससे सदैव सतर्क रहने की आवश्यकता है।
- दूध सही विधि से निकाले एवं निश्चित समय से अधिक समय तक दूध थनों में नहीं छोड़ें।
- थनों में बछड़े द्वारा किये गये घाव अथवा चोट का उपचार तुरन्त करवाये ताकि उनमें संक्रमण ना हो।

6. रेबीज (हिड़काव, जलातंक, हाइड्रोफोबिया)

यह एक अत्यन्त घातक, संक्रामक, लाइलाज, जानलेवा विषाणु जनित रोग है, जो कि लगभग समस्त पालतु पशुओं व मनुष्यों में पागल पशु के काटने से फैलता है। कारण यह रोग एक तंत्रिका प्रेरित विषाणु द्वारा होता है।

रोग का फैलाव

इस रोग के विषाणु रोगी पशु की लार / थूक में होते हैं और रोगी पशु के काटने से यह रोग फैलता है। यह रोग जंगली जानवरों जैसे भेड़िया, लोमड़ी आदि में भी होता है और उनसे पालतू पशुओं में फैल सकता है। शरीर पर कोई पागल पशु काटे अथवा पागल पशु की लार किसी घाव पर लग जाये, तो इस रोग के होने की संभावना होती है। चमगादड़ भी रेबीज रोग को फैलाते हैं और चमगादड़ से प्रायः गाय एवं भैंसों में यह रोग होता है।

लक्षण इस रोग में दो प्रकार के लक्षण होते हैं:-

(1) मूक पागलपन (2) उग्र पागलपन

1) मूक पागलन के लक्षण

- रोगग्रस्त पशु सुस्त हो जाता है।
- जबड़े की मांसपेशियों में पक्षाघात, जिससे कुत्ता न तो भोंक सकता है और न काट सकता है।
- पक्षाघात ऊपर के अंगों से नीचे उतरता है। अतः पशु घूम फिर नहीं सकता तथा तीन-चार दिन में पशु की मृत्यु हो जाती है।

2) उग्र पागलपन के लक्षण

- गतिवान वस्तुओं पर झपटना व काटने को दौड़ना।
- असामान्य रूप से चलना ।
- कुत्तों की भोंकने की आवाज में बदलाव।।
- मुँह से अत्यधिक लार गिरना ।
- निचले जबड़े का लटककर जीभ का बाहर निकल जाना।
- अवांछित वस्तुओं को काटने की चेष्टा करना।
- पशु की खाने की नली के लकवाग्रस्त होने से निगलने में तकलीफ होना।
- आंखें चौड़ी हो जाना तथा पानी न पी सकना।
- गायों एवं भैंसों में भूख कम हो जाती है। दूध उत्पादन कम हो जाता है। मुंह से लार गिरती है। पानी नहीं पीया जाता है। दांत किटकिटाते हैं।
- जानवर दीवार पर सिर मारता है, बिना किसी लक्ष्य के इधर-उधर भागता है।
- रोग के आगे बढ़ने के साथ खाना पीना बन्द हो जाता है। जानवर जमीन पर गिर जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है।
- भेड़-बकरियों में भी ऐसे ही लक्षण होते हैं।

रोग का उपचार एवं बचाव

- पागल पशु के काटने के तुरन्त बाद कटे हुए घाव को साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए।
- काटे हुए भाग पर पोटेशियम परमँगनेट या अन्य ऐन्टीसेप्टिक (स्प्रिंट) लगाना चाहिए।
- पागल पशु को एकान्त स्थान पर बांधना चाहिए एवं 10 दिन तक ध्यान रखना चाहिये।
- पालतू कुत्तों को प्रतिवर्ष रेबीज रोग से बचाव का टीका लगवाना चाहिए।
- इस रोग से मृत पशुओं को तथा दूषित वस्तुओं को जला देना चाहिए या चूने के साथ जमीन में गाड़ देना चाहिए।
- रेबीज रोग के एक बार लक्षण प्रकट हो जाये तो इसका इलाज असंभव है।
- आवारा कुत्तों की संख्या कम करें तथा पालतू पशुओं को उनके सम्पर्क में न आने दें।

बीज, पौध एवं जल स्वराज

"वर्षाकाल में एकीकृत कीट प्रबंधन"

आशा है कि आप सभी स्वस्थ और प्रसन्न होंगे और बुवाई कार्य पूर्ण होने के बाद फसल उग आई| इस माह के अंक में, मैं आपके साथ बरसात के समय फसल में लगने वाले हानिकारक कीटों के प्रबंधन पर चर्चा करूंगा |

किसान बंधुओं, यदि हम खेती करने के अपने पूर्वजो की पद्धति को देखे तो ये बात ध्यान में आती है कि वे घर के बीज, घर के जैविक खादों का उपयोग कर विविध फसलों की खेती करते थे। तब खेतों में मित्र कीटों, जीवों की संख्या अधिक थी। इन कारणों से फसलों में कीट रोगों की समस्या बहुत कम होती थी । तथाकथित उन्नत खेती तथा बढ़ते बाजारवाद से खेती में आयातित बीज, रासायनिक खाद एवं यंत्रीकरण का उपयोग किया जाने लगा । वृक्षों की अंधाधुंध कटाई हुई, जैव विविधता कम हुई, एकल फसल पद्धति को बढ़ावा मिला। जिसके कारण मित्र कीट, जीव व पक्षी नष्ट होते जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप कीट रोग का प्रकोप हर साल बढ़ने लगा है। मौसम परिवर्तन के कारण भी कीटों की क्षमता में वृद्धि होने से इनका प्रकोप बढ़ने लगा है।

जब से किसानों ने कीटनाशकों का उपयोग शुरू किया है तब से ये कीट नियंत्रित न होकर अनियंत्रित होते जा रहे हैं। नये-नये प्रकार के कीटों और रोगों का प्रकोप बढ़ा है। चाहे वो फसल में लगने वाली इल्लियाँ हो या फिर रस चूसने वाले कीट, सभी फसलो को गंभीर नुकसान पहुंचा रहे हैं। दूसरा, रसायनों के कारण कीटों के मूल स्वभाव में बदलाव हो रहा है, अब ये कीट मूल फसल को छोड़कर अन्य फसलों पर आक्रमण कर रहे हैं।

सच्ची खेती में रोकथाम के माध्यम से उपचार होने के सिद्धांत को अपनाया जाता है। कीट और खरपतवारों को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया जा सकता है परन्तु इन्हें उचित यांत्रिक प्रक्रियाओं या जैविक तरीकों आदि से नियंत्रित कर फसलों का सफल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। कुछ प्रमुख उपाय इस प्रकार हैं:

- खेत की मेड़ो पर (विशेषकर उत्तर-पश्चिम दिशा में) वृक्ष/झाडियां जैसे कि नीम, बांस, मेहंदी, सीताफल, सहजनफली आदि लगाने से खेत में सूक्ष्म जलवायु सुधरती है पाले से बचाव होता है एवं खेत में कीट रोग का प्रकोप कम होता है। फसल के लिए लाभकारी पक्षी आकर्षित होते हैं, जो कीटों को खाते है। अनेक देशी बीजों के उपयोग से कीट रोग का प्रकोप कम होता है देशी पौध प्रजातियाँ खरपतवार से भी संघर्ष कर सकती हैं
- फसल की किस्मों में भी विविधता रखने से कीट प्रकोप को नियंत्रित किया जा सकता है।

- बीजामृत, छाछ आदि से बीजोपचार करने से कीट प्रकोप कम होता है।
- मौसम के आधार पर समय पर फसल की बोवनी करने से भी कीट प्रकोप कम किया जा सकता है।
- खेत में पौधों की उचित संख्या एवं दुरी रखने से फसल को पर्याप्त सूर्य प्रकाश एवं हवा मिलती है, जिससे हानिकारक कीट का प्रकोप कम होता हैं।
- खेत में बीज छिडकने के स्थान पर कतार में बोवनी करने से खरपतवारों के नियंत्रण में आसानी होती है।
- उन्नत जैविक खाद के खेतो में उपयोग करने से पौधों में कीट से होने वाले रोगों में कमी आती है।
- खेत में पकी हुई खाद डालने से खरपतवारों का प्रकोप नहीं होता है। खाद को बीज या फसल के पौधे के पास रखने से खरपतवारों को पोषण नहीं मिल पाता है। जिससे खरपतवार नियंत्रण में आसानी होती है।
- खेतों में संतुलित सिंचाई पद्धति अपनाएँ और जल निकासी हेतु नालियां बनाये। अधिक नमी कीट और रोगों को बढ़ावा देती है | पौधे के पास सिंचाई करने से खरपतवार पर भी नियंत्रण होता है।
- खरपतवारों का नियंत्रण सदैव हाथ से या डोरा चलाकर करें। फसलों के मध्य खाली जगह में चारा बिछाने से खरपतवारों को सरलता से नियंत्रित किया जा सकता है।
- कीट से प्रभावित या रोग लगी फसलों के अवशेष को खेतों से हटाकर नष्ट कर देना चाहिए।
- तीन वर्ष में एक बार गहरी जुताई करना चाहिए।
- फसल चक्र अपनाना चाहिए इसमें कीट, रोग और खरपतवार तीनों नियंत्रित होते हैं।
- एकल फसल न लगाते हुए समन्वित फसल पद्धति अपनाएं खेतों में बहुफसली, अंतरवर्तीय, मिश्रित फसल पद्धति अपनाने से कीट, खरपतवार का प्रकोप कम होता है।

- ग्रीस या ऑइल लगे पीले/नीले चिपचिपे बोर्ड पर उड़ने वाले कीट, रंगों के प्रति आकर्षित होने वाले थ्रिप्स आदि चिपक जाते हैं। इस तरह के बोर्ड 15 नग प्रति एकड़ की दर से लगायें।

- प्रकाश प्रपंच इससे निकलने वाले पीले प्रकाश से आकृर्षित होकर हानिकारक कीट के पतंगे या तितलिया इसके नीचे भरे तेल युक्त पानी में गिरकर नष्ट हो जाती हैं। पीले प्रकाश प्रपंच 2 नग प्रति एकड़ लगायें। इसे शाम के 7 से 10 बजे के बीच में ही लगायें। इस समय शत्रु कीटों की तितलियाँ ज्यादा उड़ती हैं।

- **फेरोमोन ट्रैप:** इसमें शत्रु कीट की मादा का कैप्सूल लगाया जाता है, जिससे नर पतंगे इस प्रपंच की ओर आकृर्षित होकर प्लास्टिक बैग में फँस जाते हैं। प्रति एकड़ 7 से 8 फेरोमेन ट्रेप लगायें।

- पक्षियों को आकृर्षित करने के लिये टी आकार के लकड़ी के खूंटे (10 नग) प्रति एकड़ खेत में लगाये. यह खुंट फसल की ऊंचाई से थोड़ी ऊपर होनी चाहिए। सुबह अनेक मित्र पक्षी इस खूटी पर बैठते है और आस-पास के कीटों को खाकर नष्ट करते हैं।
- **कीट नियंत्रण हेतु चमकीली परावर्ती सतह या पट्टियों का उपयोग:** खेतों में चमकीले रंग के परावर्ती सतह या पट्टी का जमीन पर उपयोग करने से थ्रिप्स, सफेद मक्खी का प्रभावकारी नियंत्रण होता है।
- इसी तरह नर्सरी वाले स्थान पर चमकीली पट्टियों का उपयोग करने से रसचूषक कीटों का कम प्रकोप हो जाता है। पक्षियों से मक्का, ज्वार, सुरजमूखी जैसे फसलों को बचाने के लिए चमकीली पट्टियों को दाना भरने के पहले पौधों पर लगाने से कम नुकसान होता है।

स्वास्थ्य एवं पोषण स्वराज : मां का पहला दूध बच्चे के लिए अमृत है !

स्तन पान हर नवजात के लिए अमृत तुल्य होता है। मां का दूध बच्चे के लिए संपूर्ण आहार माना जाता है, पोषण के लिए आवश्यक सभी चीजें इसमें समाहित होती हैं। यही कारण है कि सभी माताओं को स्तनपान कराने की सलाह दी जाती है। स्तनपान से होने वाले लाभ को लेकर लोगों को जागरूक करने के लिए अगस्त माह के पहले सप्ताह (1-7 अगस्त) को विश्व स्तनपान सप्ताह (World Breastfeeding Week) के रूप में मनाया जाता है। दुनियाभर में मनाया जाने वाले इस सप्ताह का मकसद लोगों को खासकर महिलाओं को स्तनपान के प्रति जागरूक करना व स्तनपान से होने वाले स्वास्थ्य लाभ के बारे में जानकारी देना है ।

बच्चे के लिए पहला टीका है स्तनपान –

स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने बताया कि, स्तनपान बच्चे के लिए पहले टीके के रूप में भी कार्य करता है, जो उन्हें बचपन की सामान्य बीमारियों से बचाता है। शिशुओ को जीवन के पहले घंटे में स्तनपान नहीं कराया जाता है तो कई तरह की बीमारियों के बढ़ने का खतरा हो जाता है।)

भारत में आदिवासी राज्यों में स्तन पान की स्थिति		
देश /राज्य	राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 4 (2015 -16)	
	3 वर्ष के कम उम्र के ऐसे बच्चे जिन्होंने जन्म के तुरंत बाद के 1 घंटे में स्तनपान किया 1	6 माह से कम उम्र के बच्चे जिन्होंने 6 माह की उम्र तक केवल (exclusive) स्तनपान किया 1
भारत	41.6 %	54.9 %
राजस्थान	28.4 %	58.2 %
गुजरात	49.9 %	55.8 %
मध्य प्रदेश	34.4 %	58.2 %

प्रथम दूध (कोलोस्ट्र म) - मां का पहला दूध बच्चे के लिए आहार नहीं बल्कि अमृत है- जब भी कोई गर्भवती महिला बच्चे को जन्म देती है तो, नवजात शिशु को मां का ही दूध पिलाना चाहिए। यह बच्चे के भीतर रोग

प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है व शिशु को कई बीमारियों से भी बचाता है, यही नहीं मां का दूध नवजात शिशुओं की मृत्युदर को कम करने में भी कारगर है। शिशु के विकास के साथ-साथ हड्डियों को भी मजबूत करता है। इसलिए यह सिर्फ एक आहार नहीं बल्कि अमृत है।

नवजात शिशु को जन्म के एक घंटे के अंदर स्तनपान कराना क्यों जरूरी है ?

- जन्म के तुरंत बाद माँ के गाढ़े दूध में पाए जाने वाले तत्वों से शिशु को जीवनदायी सुरक्षा मिलती है।
- जन्म के एक घंटे के भीतर, शिशु की जागृत अवस्था का लाभ उठाकर, शिशु का स्तन से सम्बन्ध बनाना, माँ के लिए स्तनपान कराने में सहायक होता है।
- स्तनपान कराने से माँ के शरीर में दूध बनने की प्रक्रिया में तेजी आ जाती है।
- यह माँ के साथ शिशु के लगाव को मजबूत बनाता है।
- स्तनपान, प्रसव के बाद हो रहे खून के बहाव में कमी लाता है।

ध्यान दें –

- प्रसव से पूर्व पति, सास, ननद या नर्स से कहिये कि जन्म के तुरंत बाद शिशु को आपके पास लाएं, ताकि आप उसे दूध पिला सकें।
- आपके शरीर में पर्याप्त मात्रा में दूध नहीं बनेगा, यह गलत धारणा है।
- जन्म के एक घंटे के अंदर केवल अपना दूध ही पिलाना और छः महीने तक कोई बाहरी चीज जैसे पानी, शहद, घुट्टी, गाय या बकरी का दूध, पॉवडर दूध, सेरेलैक या नेस्टम इत्यादि देना शिशु के लिए हानिकारक हो सकता है।
- यदि आपकी डिलीवरी ऑपरेशन से हुई है तो भी जन्म के एक घंटे के

अंदर शिशु को दूध पिला सकती हैं।

- यदि शिशु कमजोर या कम वज़न (2.5 किलो या उससे कम) का हो तो उसे हर एक से दो घंटे में दूध पिलाइये।
- शिशु को रात और दिन हर दो से तीन घंटे में या फिर उसके मांगने पर दूध पिलाइये।
- यदि शिशु स्तनपान करता ही नहीं है तो उसे तुरंत स्वास्थ्य केंद्र ले कर जाइये।
- यदि आपका दूध उतरता ही नहीं है तो तुरंत किसी स्त्री-विशेषज्ञ से संपर्क करें।

शिशु को छः महीने तक केवल स्तनपान कराना क्यों जरूरी है ?

- छः महीने तक शिशु के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए माँ के दूध में पर्याप्त पोषण होता है और यह शिशु के लिए सम्पूर्ण आहार भी होता है।
- माँ के दूध के अलावा शिशु को कुछ भी और जैसे पानी, ग्राइप वाटर, ऊपरी आहार, गाय या फिर बकरी का दूध या पॉवडर दूध इत्यादि देने से दस्त जैसी बीमारियां हो सकती हैं।
- शिशु को माँ के दूध के अलावा कोई भी तरल पदार्थ दिया जाये तो वह स्तनपान कम करते हैं जिससे माँ का दूध बनना भी कम हो जाता है।
- जो माँ केवल स्तनपान करवाती है, उसके गर्भवती होने की सम्भावना कम होती है।

ध्यान दें –

- माँ के दूध में पानी की पर्याप्त मात्रा होती है। अगर शिशु को प्यास लगे तो केवल माँ का दूध देना ही फायदेमंद है। क्योंकि वह पानी से ज्यादा साफ है।
- तीन महीने बाद शिशु का विकास तेजी से होता है, जिसकी वजह से वह बार-बार दूध के लिए रोता है और ज्यादा मांग करने लगता है। यह एक सामान्य अवस्था है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह स्तनपान से असंतुष्ट है।
- शिशु को बार-बार स्तनपान कराने से माँ का दूध पर्याप्त मात्रा में बनना शुरू हो जाएगा।
- शिशु को दूध पिलाने के बाद उसे कन्धे पर रख कर पीठ पर हलकी मालिश करे, इससे दूध की उल्टी नहीं होगी।
- शिशु को बीमारी के दौरान और उसके बाद ज्यादा से ज्यादा स्तनपान कराना चाहिए।
- यदि शिशु को स्तनपान करने में समस्या होती है या शिशु कमजोर या सुस्त है और स्तनपान नहीं बन पा रहा है तो उसे तुरंत स्वास्थ्य केंद्र ले जाइये।

मां को स्तनपान के लाभ–

समुदाय और परिवार के बुजुर्ग अक्सर बच्चे के लिए स्तनपान के फायदों के बारे में जानते हैं। हालाँकि, यह माताओं के लिए भी कितना महत्वपूर्ण और उपयोगी है,जैसे -

- कई महिलाओं के लिए, स्तनपान गर्भावस्था के दौरान बढ़े अतिरिक्त

वजन को कम करने में मदद करता है। यह कैलोरी बर्न करने में मदद करता है।

- स्तनपान के दौरान शरीर ऑक्सीटोसिन हार्मोन रिलीज करता है। इससे गर्भाशय को सिकुड़ने और गर्भावस्था से पहले के आकार में वापस जाने में मदद मिलती है।
- जो महिलाएं स्तनपान कराती हैं उनमें कई बीमारियों- उच्च रक्तचाप, गठिया, मधुमेह और स्तन कैंसर का खतरा कम होता है।
- माँ तथा शिशु के बीच भावनात्मक संबंध मजबूत करने का सुलभ साधन है।

स्थानीय स्तर पर जागरूकता के लिए सामूहिक प्रयास –

- ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एव पोषण समिति विश्व स्तनपान सप्ताह

पर स्तनपान सम्बंधित जागरूकता हेतु स्थानीय स्तर पर बैठक, कार्यक्रम आयोजित करे व अन्य निर्धारित गतिविधियों में सहयोग करे।

- ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एव पोषण समिति अपनी मासिक बैठक में स्तनपान पर जागरूकता हेतू नियमि त चर्चा करे ।
- ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एव पोषण समिति के सदस्य अपने आस-पास के गर्भवती महिलाओ व शिशुवती माताओ से व उनके परिवार के सदस्यों से संपर्क कर स्तनपान से सम्बंधित समझाईस देवे।
- ग्राम स्वास्थ्य एव पोषण दिवस व अन्य स्वास्थ्य और पोषण सम्बंधित कार्यक्रमों पर गर्भवती महिलाओ,शिशुवती माताओ, किशोरी बालिकाओ व अन्य सदस्यों से स्तनपान के महत्त्व और उससे होने वाले लाभ पर चर्चा करे ।
- समुदाय - महिला बाल विकास व स्वास्थ्य विभाग का स्थानीय स्तर पर स्तनपान पर जागरूकता बढाने में सहयोग करे ।

विशेष : नवजात को स्तन पान मिल सके, यह सुनिश्चित करना न केवल माताओं, बल्कि परिवार के सभी सदस्यों और समुदायों की सामूहिक जिम्मेदारी है। सामुदायिक प्रयासों, अनुकूल नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से हमें हर व्यक्ति को शिक्षित करने की आवश्यकता है, जिससे बाल मृत्युदर और बीमारियों के जोखिम को कम कर स्वास्थ्य समाज का निर्माण किया जा सके ।

शिक्षा एवं विकास स्वराज : विद्यालय में नामांकन हेतु समुदाय की भूमिका और शिक्षा का अधिकार कानून

पृष्ठभूमि–

सीखने और समझने को आतुर बच्चे हमेशा ही प्रयासरत रहते हैं लेकिन प्रतियोगिता के इस दौर में बच्चे मानवीय संवेदनाओं के स्पर्श से परे इंसान की बजाय एक मशीन बनने की ओर अग्रसर हो रहे होते हैं । शिक्षा में गुणवत्ता के नाम पर बच्चों में प्रतियोगिता बढाकर हीन भावना का विकास किया जा रहा है जो कि बच्चों को स्पष्ट रूप से विभाजन की ओर धकेलता है । सामाजिक स्तर पर एक संवेदनशील मनुष्य के विकास की ओर सोचे जाने की ज़रूरत है, जहाँ बच्चे सहज रूप से दबाव और तनाव रहित माहौल में गतिविधि आधारित शिक्षण के साथ ही स्वयं करके सीखने की ओर अग्रसित हो सके । और सीखने के भरपूर माहौल के साथ ही रूचि के ख़ास ख्याल के साथ सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बन सके। और इस सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं के दौरान शिक्षक अपनी पैनी निगाह से बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के आयाम और पहलू को जांच ले जहाँ शिक्षक विश्वास और तथ्यों के आधार पर यह कह सके कि हाँ मेरे , बच्चें इतना सीख गए हैं। बच्चों की रुचियाँ क्या -क्या है ? किस तरह कि विशेष प्रकार कि बच्चो को मदद कि जरूरत है ? करवायी गयी गतिविधियों ने बच्चो को सिखने में कितना सहज बनाने में मदद की ? बच्चो कि आगामी जरुरतों को पूरा करने में शिक्षक कि आगामी कार्य योजना क्या होंगी और इस कार्य योजना के विभाजन अनुरूप शिक्षक तैयारी के हिस्से कितने और किस प्रकार से हो रहे होंगे | बच्चे अपने आप अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नया ज्ञान निर्माण उतनी ही सहजता के साथ कर रहे होंगे अब तक वह इस प्रक्रिया का हिस्सा बना पाया होगा ।

चूँकि आदिवासी अंचल के परिवेश में पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की ओर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है जिसमे शिक्षक और विद्यालयों की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं ।

शिक्षा का अधिकार-एक कानून

बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकारों की श्रेणी में आता है। देश में 6 से 14 वर्ष की आयु के वंचित वर्ग के बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए संसद द्वारा 4 अगस्त 2009 को पारित शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू किया गया था। इस अधिनियम के अनुसार ऐसा बच्चा जिसका विद्यालय में नामांकन नहीं हुआ है उसे उसकी आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश दिया जायेगा। विद्यालय में किसी के द्वारा भी बच्चे को किसी भी कक्षा में प्रवेश से रोका नहीं जायेगा और न ही बच्चे को निकला जायेगा। इसके साथ ही यह अधिनियम बच्चों के साथ शारीरिक दंड एवं मानसिक उत्पीड़न का प्रतिरोध करता है। प्रत्येक विद्यालय में एक विद्यालय समिति का गठन होगा जिसमे 75 % या फिर 3/4 संरक्षक इसमें भी 50% महिलाओं की भागीदारी निश्चित की गयी। अधिनियम के अनुसार इस अधिनियम के लागू होने के बाद से 3 वर्ष के भीतर निर्धारित सीमा में विद्यालयों का बुनियादी ढांचा तैयार करना होगा। इस अधिनियम के समस्त पैरामीटर शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के क्रम में बनाये गए ।

समुदाय की भूमिका

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर, सामाजिक मूल्यों को सीखना और जीवन में आत्मसात करना इसका एक आवश्यक अंग है। विकास के इस क्रम में विद्यालय की भूमिका अहम् होती है जहाँ रहकर बच्चे के सामाजिक, बौद्धिक, भावनात्मक, रचनात्मक विकास समुदाय को यह समझना आवश्यक है कि:-

- विद्यालय ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ जीवन के गुणों तथा विशिष्ट क्रियाओं और व्यवसायों की शिक्षा बालक के अन्तर्निहित के विकास के लिए दी जाती है।
- विद्यालय को प्रमुख रुप से ज्ञान देने वाले साधन के रुप में नहीं वरन् उस स्थान के रुप में समझा जाना चाहिए जहाँ बालकों का विकास होता है तथा वे क्रियाएँ विस्तृत संसार में बहुत महत्व की होती हैं।
- अर्थात विद्यालय वे संस्थाएँ हैं जिनको इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता तथा बालकों को तैयारी में सहायता प्राप्त हो।

छात्र के ऊपर उसके साथियों का प्रभाव काफी पड़ता है। बालक के विकास के विविध आयाम जैसे-शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, रचनात्मक एवं सामाजिक अपने हम उम्र संगी-साथियों के साथ भी होता है। बच्चा भाषागत विकास अपने संगी-साथियों के साथ रहकर आपस में एक दूसरे के बोलने का ढंग, वाक्यों की रचना, शब्द भंडार बनाता है और आपस में एक दूसरे की भाषा एवं बोली से परिचित होते है ।

विद्यालय में बालक के साथ भिन्न-भिन्न समुदाय, जाति एवं धर्म के बालक होते हैं। हर जाति एवं धर्म का अपना इतिहास होता है। समूह में रहकर विविध संस्कृतियों के अपने सहपाठियों से उनके रीति-रिवाजों, विविध धर्मों के त्यौहारों के विषय में एवं उनके इतिहास के बारे में जानता है । सभी समुदाय के बालकों से उनकी संस्कृति के अनुसार उनके रीति-रिवाज, प्रथाएँ एवं परम्पराएँ सीखता है, उनके संगीत एवं साहित्य से परिचित होता है। इस तरह उसके संगी-साथियों से भी उसका सामाजिकरण होता है।

बच्चे के सीखने के प्रत्येक आयाम को ध्यान में रखते हुए समुदाय को विद्यालयों का नियोजन और विकास ठीक से होने लगे इस बात की जिम्मेदारी लेनी होगी, अपने बच्चे के विकास के प्रत्येक पहलू को ध्यान में रखकर सोचना और फैसला लेना होगा, बच्चों की सुरक्षा और विकास के प्रत्येक आयाम को ध्यान में रखकर विद्यालयों में बच्चों को होने वाली छोटी से छोटी असुविधा के लिए सवाल खड़े करने होंगे और हमारे परिवेश, क्षेत्र में हमारे बच्चों के समुचित विकास के लिए विद्यालय बने हैं इसे अवसर समझकर बच्चों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करना होगा और साथ ही यह सुनिश्चित करना होगा कि विद्यालय की उम्र का समुदाय का प्रत्येक बच्चा विद्यालयों में नामांकित हो और नियमित रूप से विद्यालय जाए ।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – हिरन

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन ने मनरेगा के तहत अर्थन चेक - डेम निर्माण कर लायी हरियाली और खुशहाली.. 30 किसान परिवारों की 100 बीघा कृषि भूमि को हुआ फायदा :-

वाग्धारा द्वारा गठित कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन समुदाय आधारित संगठन है | जो समुदाय के लोगों द्वारा बनाया गया है| अपने कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन पोटलिया के उद्देश्य एवं कार्य को नियमित रूप से करते हुए अध्यक्ष चिमनलाल डामोर बताते है कि यह संगठन चालीस गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है संगठन सदस्य अपने-अपने क्षेत्र के सभी वंचित परिवारों के साथ मिलकर जन कल्याणकारी कार्यों को स्वयं से करना एवं समुदाय से करवाना| स्थानीय स्तर पर लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए समुदाय के सहयोग से समाधान करना एवं करवाना साथ ही पैरवी संबंधी समस्त कार्य समुदाय हित के लिए करता है ।

संगठन स्थानीय लोगों के द्वारा निर्वाचित सदस्यों से मिलकर बनाया गया है इससे संगठन कि कार्यकारणी में 20 सदस्य होते हैं जिसमें 10 पुरुष व 10 महिला सदस्य है ।

संगठन के माध्यम से लोगों को नेतृत्व प्रदान करना और समुदाय में विकास एवं स्वराज कि अवधारणा व्यापक रूप से स्थापित करने हेतु प्रयास करना और आगे अपनी भूमिका बताते हुए संगठन सदस्य चिमनलाल डामोर कहते हैं कि अध्यक्ष सरपंच, वार्ड-पंच, सचिव और अन्य सरकारी अधिकारियों के साथ संपर्क शक्ति बढाना। उपाध्यक्ष, सचिव और अन्य सदस्यों के साथ मिलकर समस्या समाधान के लिए ग्राम पंचायत को आवेदन पत्र सौंपना । सरपंचों से मिलने और लाभार्थियों के बारे में उन्हें याद दिलाने के लिए बार-बार ग्राम पंचायत व ब्लॉक स्तर पर सम्पर्क करना । एक नेतृत्व कर्ता के रूप में सदैव संगठन के समस्त नियमों का स्वयं पालन करना एवं अन्यों को पालना करवाना । एक नेतृत्व कर्ता के रूप में सदैव समुदाय एवं अपने संगठन के सदस्यों को सहयोग प्रदान करना । ग्राम स्तरीय विकास कार्यक्रमों में भागीदारी एवं उनके बारे में समुदाय में जानकारी पहुँचाना|ज्ञापन लिखना एवं लिखवाना |

वागधारा गठित कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन पोटलिया के सदस्य सोमली बेन देवदा अपने कार्य के बारे में कहती हैं की ग्राम स्तरीय विकास कार्यक्रमों में भागीदारी करना एवं समुदाय को सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करना तथा उनको योजनाओं का लाभ दिलवाना । अपने क्षेत्र के समुदाय आधारित संगठनों के बारे में जानकारी एकत्रित करना एवं उनकी तय बैठकों में भागीदारी सुनिश्चित करना | सरकारी संस्थाओं के द्वारा समुदाय को उपलब्ध होने वाली सुविधाओं की समय-समय पर निगरानी कर उनके सफल संचालन के लिए कार्य करना जैसे आंगनवाडी, विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र आदि इसी के साथ हमारा कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सामूहिक प्रयासों से महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (महात्मा गांधी नरेगा) ने मजदूरों और किसानों की जिंदगी के अलावा गाँव के प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन को भी बेहतर बनाया है। पहली बरसात में ही बहता दिखाई देने वाला अर्थन चेक - डेम, अब जल संवर्धन के कार्यों से बारिश के पहले और बाद में भी जीवंत दिखाई दे रहा है। बाँसवाड़ा जिले के देवदासाथ गाँव में महात्मा गांधी नरेगा से अर्थन चेक - डेम का निर्माण पंचायत ने करवाया है । और अब, यहाँ रुके पानी से आस-पास की जमीन हरी-भरी हो गई। गाँव के लगभग 30 किसानों ने नाले से लगे अपने खेतों में मक्का, धान के अलावा सब्जियों का भरपूर उत्पादन लिया, इससे उन्हें अच्छी-खासी आमदनी हुई। इस प्रकार अर्थन चेक - डेम ने किसानों की जिन्दगी को खुशहाल बना दिया है।

जिले के कुशलगढ़ ब्लॉक की देवदासाथ ग्राम पंचायत में दिखाई दे रही इस हरियाली और खुशहाली के पीछे पंचायत की सोच और ग्रामीणों की मेहनत है। पंचायत ने साल 2022 -23 में इस गाँव में बहने वाले नाले में भूमि क्षरण को रोकने एवं संग्रहित जल के जरिये भू-जल भंडारण के उद्देश्य से महात्मा गांधी नरेगा के तहत जल संवर्धन का कार्य कराया था। इसके अंतर्गत 8,00000 लाख रुपये की लागत से अर्थन चेक - डेम का निर्माण कराया गया। यहाँ 35 महिलाओं और 45 पुरुषों को मिलाकर, कुल 80 ग्रामीणों को 218 मानव दिवस का रोजगार महात्मा गांधी नरेगा से मिला इससे इन परिवारों का पलायन रुक गया । देवदासाथ ग्राम पंचायत **सरपंच श्रीमती दरमिला देवदा** ने बताया कि गाँव में महात्मा गांधी नरेगा योजना से हुए इस जल संवर्धन के काम ने बड़ा असर डाला है। इसमें 36 ग्रामीण परिवारों को सीधे रोजगार मिला। चेक डैम बनाने से नाले में अधिक समय तक पानी रुका, जिसका उपयोग नाले से लगी कृषि भूमि के किसानों ने अपनी खेती-बाड़ी में किया। इस कार्य से गाँव के 30 किसान परिवारों की लगभग 100 बीघा कृषि भूमि सिंचित हुई है।

वागधारा गठित कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन के सदस्य श्री मांगीलाल घडिया आगे बताते हैं कि अर्थन चेक - डेम बनने से पानी रुका और यह पानी हमारे खेती एवं पशुओं के लिए उपलब्ध हो गया साथ ही भू-जल भंडारण में वृद्धि हुई है। इसका प्रभाव नाले से लगे किसानों की जमीन में खुदे नल कूपों में साफ देखा जा सकता है। अर्थन चेक - डेम बनने के पूर्व मई-जून महीने में इन नल कूपों में जल स्तर 400 से 500 फिट नीचे चला जाता था, जो आज 150 से 250 फुट पर आ गया है। भू-जल स्तर बढ़ने से आस-पास हरियाली भी बढ़ गई है। अर्थन चेक - डेम में हुये जल संवर्धन के कार्य से लाभान्वित किसान और वागधारा गठित कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सदस्य श्री शंकर लाल देवदा बताते हैं कि कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन पोटलिया के विगत 2 वर्षों से संगठन के सक्रिय सदस्य श्री शंकर लाल जी ने अपने गांव में पलायन को रोकने हेतु ग्राम स्तर की बैठक कर पलायन की समस्या ग्राम वासियों के सामने रखी तथा बैठक में सरपंच को भी आमंत्रित किया गया जिसमें किस क्षेत्र में पलायन से परिवार में अन्य कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है इस हेतु सरपंच एवं ग्राम वासियों के सामने समस्या रखी जिसमें सरपंच को एक ऐसा कार्य स्वीकृत करवाने का प्रस्ताव रखा जिससे लोगों को रोजगार मिले एवं पलायन नहीं करें तभी श्री शंकर लाल जी ने एक सामूहिक चेक डैम बनाने का प्रस्ताव रखा जो तुरंत ग्राम सभा के रजिस्टर में चढ़ा कर उसको पंचायत समिति स्वीकृति हेतु भेजा गया इसके बाद 15 दिन के अंदर कार्य स्वीकृत होकर उस जगह पर वर्तमान में 80 परिवारों के 120 लोग कार्यरत है तथा 80 परिवार में से कोई भी परिवार पलायन नहीं है | श्री शंकर लाल देवदा ने बताया कि गांव में किसी भी प्रकार का लोगों का पलायन नहीं हो उस पर निरंतर कार्य कर रहे हैं, नाले से लेकर उनकी 4 बीघा कृषि भूमि है, जिसमें उन्होंने नाले के पानी से बट्टी, बैंगन, करेला, मिर्च और तोरई सब्जियों की पैदावार ली। इन सब्जियों को बेचने से उन्हें लगभग एक लाख रुपये की आमदनी हुई।

श्री शंकर लाल देवदा के खेत के नजदीक श्री प्रमोद देवदा, श्री भीम जी देवदा, श्री जमना देवदा , श्री दिनेश देवदा , श्री कांतिलाल देवदा, श्री पंकज देवदा ,श्री महेश देवदा , श्री संजय देवदा,श्री किजा देवदा भी ऐसे ही किसान हैं, जिन्होंने नाले से लगी अपनी कृषि भूमि पर इस साल सब्जियों का उत्पादन लेकर लाभ कमाया। महात्मा गांधी नरेगा योजना से हुये इस छोटे से कार्य ने किसानों की जिंदगी में खुशियों के बड़े-बड़े पल लाकर, उन्हें खुशहाल बना दिया है।

एक नजर-

कार्य का नाम- है। अर्थन चेक - डेम निर्माण कार्य - देवदासाथ में, कार्यकारी संस्था – ग्राम पंचायत देवदा साथ, पंचायत समिति – कुशलगढ़ , जिला- बांसवाडा , राजस्थान ।

स्वीकृत राशि- 8.00 लाख, स्वीकृत वर्ष- 2022 -23, जिला परिषद, बांसवाडा |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज सगंठन सहयोग इकाई- माही

साथियों बरसात का मौसम अपने चरम पर है और इसके साथ ही बरसात के मौसम में जलभराव, पानी के जमाव के कारण मौसमी बिमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इस दौरान हमारे समुदाय को स्वच्छता, सुरक्षा, और स्वास्थ्य महत्व के बारे में ध्यान रखना होगा । स्वच्छता के नियमों का पालन करे | हमारे घर में जब खाना बनाते एवं खाते है, टॉयलेट जाते हैं तो सुनिश्चित करें कि आप स्वयं एवं अपने बच्चो के हाथ धोये एवं गाँव के अन्य साथियों को भी प्रेरित करे जिसमे साबुन और पानी का उपयोग करके हाथों को साफ करें और उन्हें अच्छी तरह से सुखा लें । साथ ही हमे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जिन गाँव में नालों, नहरों और बांधों की संरचनाएँ सही तरीके से काम नही कर रही हैं या किसी भी संरचना में कोई समस्या है, तो उसे तत्परता से ठीक करें ताकि पानी के विनाशकारी प्रभाव से गाँव को बचाया जा सके। जिसमे हमे समय रहते हमारे गाँव के सरपंच, वार्ड पंच, पटवारी, सिंचाई विभाग के कर्मचारी एवं सबसे महत्वपूर्ण हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों से तुरंत संपर्क करना होगा ताकि हमे बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़े ।

सच्ची खेती :- अगस्त में मल्च लगाने से मिट्टी में गर्मी और उष्णता बनी रहती है, जिससे जमीन की उपजाऊता बढ़ती है। इससे माटी की फुटाई और संरक्षा भी होती है| साथियों हमारी मल्चिंग दुनिया की सबसे श्रेष्ट मल्चिंग है क्योंकि किसान जब खरपतवार में लगते है तब फसलों के बीच खरपतवारी घास या रोगग्रस्त पौधों को हटा देते है व किसान इसको पुनः वही रख देते है जिससे मल्चिंग भी हो जाती है और इससे खेत को खाद भी मिल जाता है । हमारे क्षेत्र में कुछ समय से किसान रासायनिक छिडकाव करके खरपतवार को नष्ट कर कर रहे है जिससे दूरगामी परिणाम बहुत गंभीर रहने वाले है क्योंकि एक समय के बाद यह रासायनिक छिडकाव जिसमें विशेष तत्वों को शामिल किया जाता है ये वनस्पतियों के विकास को रोकता हैं, ये तत्व उच्च मात्रा में होते हैं और मित्र वनस्पतियों को मारने के लिए प्रभावी होते हैं जिससे आने वाले समय में जमींन से फसले लेना असंभव सा हो सकता है |

साथियो अब हमारे द्वारा जो भी सब्जियों की नर्सरी/

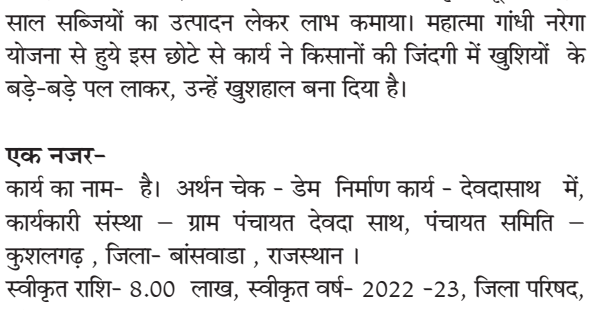

बेड/वाड़े पर जो भी सब्जी बीज उगाए गए है उनका समय भी अब आ गया है कि हम खेतो/वाड़ में पुनर्स्थापन(ट्रांसप्लांट) करे ताकि हमे उचित समय में इसका लाभ मिले इसमें एक बात और जोड़ना चाहूँगा की अगर आप डूंगर,मियासा,पाडला,खमेरा,भुंगड़ा,पीपलखूंट के आस-पास के क्षेत्र में रहते है और आपके पास सब्जी का रोप नहीं हो तो आप फुटिया डूंगरी में वाजी /धनजी निनामा के यहाँ से सब्जी कि पौध ले सकते है l

सच्चा बचपन – साथियों आज हमारे समुदाय में हम देखते है अब अभिभावक पढाई पर ध्यान ज्यादा देने लगे है अच्छी बात है परन्तु इसके बिच में बच्चे स्थानीय खेती और परम्पराओ से दूर हो रहे है | हमारे क्षेत्र को बरसात का मौसम स्वर्ग सा बना देता है और विभिन्न प्रकार की बहुत सी वनस्पतियाँ जन्म लेती है जिनका उपयोग हम लेना जानते है पर यह सन्देश हमें आगे भी देना होगा | इस बार बच्चो के साथ में प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए गाँव के आस-पास की जगहों पर ले जा सकते हैं। यहाँ वे पेड़-पौधों पक्षियों को देख सकते हैं और सूक्ष्म से सूक्ष्म वनस्पति की महत्वता से अवगत करवा सकते है | बच्चो को प्राकृतिक खेती रूबरू करने का अवसर मिल सकता है। आप उन्हें खेत में ले जा सकते हैं और उन्हें खेती के बारे में सिखा सकते हैं, जैसे कि खेत में फसलों की देखभाल करना, मिट्टी की तैयारी करना और बीज बोना। यह उन्हें कृषि प्रक्रिया के बारे में सीखने का मजेदार तरीका हो सकता है | बच्चों के लिए एक ग्रामीण सफारी का आयोजन भी कर सकते हैं। इसमें उन्हें गाँव के आस-पास की जगहों पर घूमने ले जा सकते हैं और उन्हें गाँव की संस्कृति, परंपराएं, स्थानीय व्यवसायों और जीवनशैली के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इससे वे अपने गाँव के महत्वपूर्ण स्थानों को देख सकेंगे और अपने आस-पास के लोगों से अधिक सीख सकेंगे।

सच्चा स्वराज :- स्वराज के लिए संगठनो की मांग अब देखने को मिली है चाहे वह नहरी सिंचाई हेतु टेल तक के किसानो की आवाज हो,गाँवो में खाध्य सुरक्षा से वंचित परिवार हो,विद्यालयों में शौचालय एवं चारदीवारी हो या फिर पशु टीकाकरण हो, हर क्षेत्र के मुद्दे की पहचान करना सिखा है | हमारे पालतू पशुओं के लिए गाँवो में टीकाकरण शुरू हो गये है आप सभी से अनुरोध है की ज्यादा से ज्यादा मात्रा में अपने छोटे बड़े पशुओ को आस- पास के पशु चिकित्सालय ले जाए ताकि हमारे पशुओ को बरसाती मौसम में रोग और संक्रमण के खतरे से बचाया जा सके । पशुओं को स्वस्थ रखने में टीकाकरण मदद करता है , साथ ही पशुओं को वैक्सीनेशन से बीमारियों से बचाने के लिए प्राप्त एंटीबॉडीज़ की मदद से उनकी जीवन की अवधि बढ़ती है। उन्हें विभिन्न रोगों के खिलाफ प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करता है। पशुओं में टीकाकरण विभिन्न बीमारियों के प्रसार को रोकने और जनसाधारण को सुरक्षित रखने में मदद करता है। साथियों आने वाले महीनों में हमें इसी प्रकार से आगे बढ़ना होगा ताकि सभी स्वराज संगठन मिलकर हमारे गाँव के हर वंचित परिवार तक अपनी पहुँच बनाये और हर योजना का लाभ वंचित परिवारों को दिलवाने में मदद करे |

"चलो हाथ मिलाएं आगे आएं हर घर में शिक्षा की अलख जगाए"

सच्चा स्वराज

कृषि एवं आदिवासी स्वराज सगंठन, ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह एवं समस्त समुदाय वर्तमान समय में समस्त परिवार के सदस्य अपने- अपने खेतों में फसल कि निराई- गुड़ाई करने में लगे है क्योंकि हमारी आजीविका " खेती" पर निर्भर है | इस दौरान कई बार खबरे मिलती रहती है कि खेत पर काम करते हुए सांप या जहरीले कीट काटने से हुई मौत, साथियों बांसवाड़ा जिले को सांपो कि राजधानी के नाम से भी जाना जाता है | यहाँ हर वर्ष 100 से ज्यादा लोगो कि मौत सांप या जहरीले कीट के काटने से हो जाती है , और ज्यादातर बरसात के मौसम में अपने बिलों से बाहर निकलते है | इस दौरान खेत पर काम करते समय जहरीले कीटो द्वारा काटे जाने पर असमय जनहानि होने का भय बना रहता है | हमे सावधानी रखते हुए अपने घर, आंगन, खेत पर काम करना चाहिए अगर फिर भी कोई दुर्घटना हो जाये तो तुरंत नजदीकी चिकित्सालय में लेकर जाये | इस प्रकार की घटनायें घटित होती है तो राजस्थान सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है तो आइये हम जानते है राजस्थान सरकार की योजना **" राजस्थान राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना "** के बारे में |

साथियों वर्तमान समय में ये योजना सम्पूर्ण राजस्थान में संचालित है | इस योजना में अंग भंग होने या मृत्यु हो जाने पर 5 हजार से 2 लाख रूपये तक कि सहायता दी जाती है। 11 सितम्बर 2009 को इस योजना का दायरा बढ़ाकर किसान के साथ-साथ खेतिहर मजदूर को भी इस योजना में शामिल कर दिया गया है । कृषि कार्य करते समय चोट लगने एवं मृत्यु होने पर किसानों के आश्रितों को इस योजना में लाभ दिया जाता है ।

राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना क्या है ?

- राजस्थान सरकार द्वारा संचालित राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना मुख्य रूप से किसानों और कृषि श्रमिकों के लिए शुरू की गई है। यदि किसान या कृषि श्रमिक खेत में काम करते समय, सिंचाई के दौरान करंट लगने से अंग-भंग होने, फसल बुआई के लिए खेत की तैयारी, मेड़ निर्माण के समय, अनाज निकालते समय, तूफान, बारिश के समय पेड़ के नीचे दब जाने से हुई दुर्घटना, खेत में कोई भी जहरीला कीट,सांप, मधुमक्खी, बिच्छू, पालतू जानवर या आवारा जानवर, जहरीले कीड़ों द्वारा काट लेने पर संक्रमित होने या फिर खेत की सिंचाई के दौरान या विभिन्न कृषि उपकरणों का उपयोग करते समय मशीनरी द्वारा चोट लग जाने पर अंग भंग एवं कभी –कभी मृत्यु भी हो जाती है तो इस स्थिति में राजस्थान सरकार योजना के माध्यम से किसानों और खेतों में काम करने वाले विभिन्न श्रमिकों को मुआवजे के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करती है ।
- **राजस्थान राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना के अंतर्गत विभिन प्रकार के दुर्घटनाओं में मिलने वाली सहायता राशि :**

क्र.स.	दुर्घटना	सहायता राशि
1.	मंडी प्रांगण में कार्यरत हमला/पल्लेदार/मजदूर को किसी प्रकार का फ्रैक्चर होने पर	10000/– रूपये
2.	एक उँगली कटने पर	5000/– रूपये
3.	दो उँगली कटने पर	10000/– रूपये
4.	तीन उँगली कटने पर	15000/– रूपये
5.	चार उँगली कटने पर	20000/– रूपये
6.	एक अंग जैसे हाँथ, पाँव, आँख आदि भंग होने पर	25000/– रूपये
7.	पुरूष अथवा महिला बालों का आंशिक रूप से सिर से खाल उतारना (डी स्केलपिंग) पर	25000/– रूपये
8.	पुरूष अथवा महिला के बालों का डी स्केलपिंग होने पर	40000/– रूपये
9.	रीड की हड्डी टूटने या सर पर चोट लगने पर	50000/– रूपये
10.	दो अंग काटने पर जैसे हाँथ, पैर, आँख आदि	50000/– रूपये
11.	मृत्यु होने पर	2 लाख /– रूपये

- **राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना का क्रियान्वयन :**

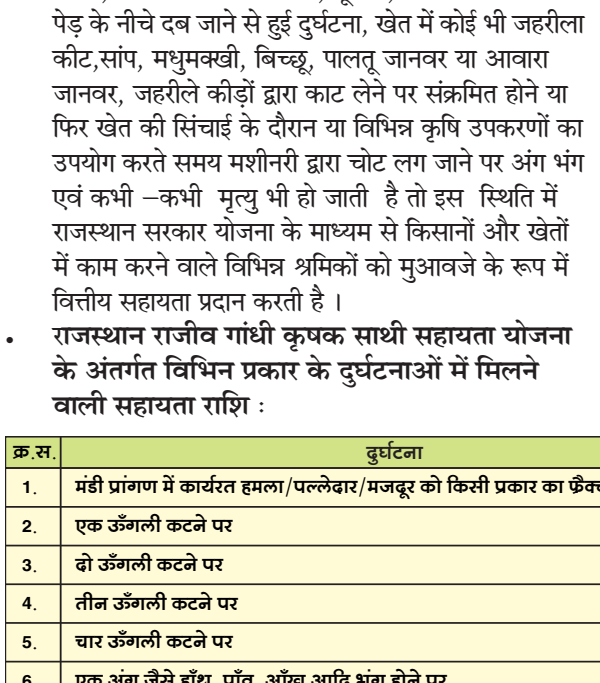

- कृषक साथी योजना के सफल क्रियान्वयन से राज्य के सभी किसानों को बहुत लाभ होगा। इस योजना का क्रियान्वयन कृषि मंडी समिति द्वारा किया जा रहा है |
- दुर्घटना में घायल या मारे जाने के छह महीने के भीतर किसान को अपने क्षेत्र की नजदीकी मंडी समिति कार्यालय में जाकर राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना के लिए आवेदन जमा करना होगा।
- यदि किसी कारणवश किसान छह माह के बाद आवेदन जमा करता है तो उसे देर से आवेदन जमा करने का कारण मंडी समिति को बताना होगा। इस समय सीमा को अधिकतम तीन महीने तक और राज्य सरकार द्वारा अधिकतम छह महीने तक बढ़ाया जा सकता है।
- लेकिन इसके बाद भी अगर कोई किसान आवेदन करता है तो किसान का आवेदन अमान्य माना जाएगा और उसे इस योजना का कोई लाभ नहीं मिलेगा।
- राजस्थान सरकार ने ऑनलाइन आवेदन करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है ताकि प्रभावित परिवार/व्यक्ति जल्दी आवेदन कर सकें।

राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना में पात्रता :-

किसी भी सरकारी योजना के कुछ महत्वपूर्ण पात्रता नियम होते है। जिसके माध्यम से सरकार योजना के लाभार्थियों की पहचान कर उन्हें लाभ प्रदान करती है। ठीक वैसा ही,राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना के भी कुछ महत्वपूर्ण पात्रता नियम हैं। तो चलिए दोस्तों जान लेते हैं मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना की पात्रता नियम के बारे में :-

- किसान राजस्थान का स्थायी निवासी हो ।
- किसानों के पास अपना आधार कार्ड होना चाहिए।
- राजस्थान में सभी किसान और खेतिहर मजदूर इस योजना के लिए पात्र हैं।
- इस योजना के लाभार्थी की आयु 14 से कम ना हो और 75 वर्ष से अधिक नही होनी चाहिए।

राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना में जरूरी दस्तावेज :

- आधार कार्ड तथा फोटो
- राशन कार्ड
- आय प्रमाण पत्र
- जन आधार नबंर
- मोबाइल नंबर
- चिकित्सक का प्रमाण पत्र
- पोस्टमार्टम रिपोर्ट
- पुलिस एफ आई आर
- पंचनामा तथा इलाज की पर्ची
- दवाइयों के बिल
- शपथ पत्र तथा बैंक अकाउंट नंबर

राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना के लिए आवेदन कैसे करें ?

मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना का लाभ लेने के लिए आपको सबसे पहले इस योजना के लिए नजदीकी ई- मित्र पर आवेदन करना होगा या अपने क्षेत्र के सचिव, पटवारी, ग्राम सेवक, सरपंच से भी सम्पर्क कर आप अधिक जानकारी ले सकते है तथा आप अपने Android मोबाइल से इस योजना के लिए आसानी से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे साथ ही गाड़ी कि स्पीड कम रखे... क्योकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – मानगढ़

सफलता कि कहानी –

नाम– नीता बेन देवजी भाई ,
गांव. भीचोर, तालुका , फतेपुरा , जिला – दाहोद
परिवार विवरण
पति –पत्नी, 2 लड़की एवं 1 लड़का
शिक्षा – नीताबेन साक्षर , देवजी भाई 12 वी शिक्षा ली ,
बड़ी लड़की कक्षा 9 में हिम्मतनगर में अध्ययनरत है |
छोटी लड़की 6 में एवं लड़का 5 कक्षा में पढ़ता है।
जमीन– 1 बिघा स्वयं की एवं 2 बिघा गिरवी रखी है।
नीताबेन सक्षम समूह में पिछले 3 साल से सदस्य के रूप जुड़ी है |

विवरण :–
नीता बहन को पिछले साल करीबन ढ़ाई सौ ग्राम तिल का बीज वाग्धारा संस्था द्वारा उपलब्ध करवाया गया था। नीता बेन ने अपने खेत में तिल के बीज को बोया , अच्छी तरह से देखभाल करने के उपरांत उपज करीबन 140 किलोग्राम तिल का उत्पादन हुआ । परिवार के सभी सदस्यों में खुशी कि लहर दौड़ी जो उम्मीद से ज्यादा उत्पादन हुआ | नितांबेन ने अपने पास के ही बाज़ार फतेहपुरा में तिल का भाव मालूम किया तो प्रति 20 किलो के 1800 रुपए के भाव से मांग हो रही थी , जबकि गुजरात के राजकोट के धारी क्षेत्र में तिल का भाव अधिक होने की बात सुनी, तो परिवार के सदस्यों से बात कर निर्णय लिया कि हम अपने तिल को राज कोट में बेचेंगे , परिवार के सदस्यों से सहमती मिलने के बाद नीता बेन ने अपने ही गाँव के कई लोग रोजाना जाने वाले मजदूरों के साथ बस में तिल बेचने के लिए भिजवाये और धारी क्षेत्र में उन्होंने प्रति 20 किलो के 2400 के भाव से बेचा गया। जो कुल 48000 रूपये के हुए | इस वर्ष गर्मी के सीजन में वागधारा संस्था से करीबन 5 किलो मूंग नीता बेन ने फिर से लिया और समय पर डेढा वापस भी कर दिया | नीता बेन ने एक बीघा जमीन में मुंग की बुवाई की थी । जिसमें से 320 किलोग्राम मुंग का उत्पादन हुआ । नीता बेन द्वारा पहली बार मूंग की खेती की गई, अच्छी पैदावार होने की वजह से प्रति 20 किलो 1600 रुपए के भाव से 32000 रूपये के मुंग बेचे गए और आने वाले गर्मी के सीजन के लिए भी अपने घर में 10 किलो ग्राम बीज के रूप में मूंग । नीताबेन का कहना है कि अब मैं हर साल मूंग की खेती करूंगी जिससे अच्छी पैदावार के साथ ही कम समय में आमदनी प्राप्त हो जाति है | नीता बेन ने बताया कि मेरे द्वारा कि गयी खेती से हुई आमदनी पर आस -पास के परिवारों में भी चर्चा होने लगी , जिससे अन्य परिवार भी मेरे को देखकर मांग करने लगे हैं कि हमें भी आने वाले समय में मुंग उपलब्ध करवाना ताकि हम हमारे खेतों में मूंग की खेती करें। नीता बेन ने बताया कि समय -समय पर वागधारा संस्था द्वारा बीज उपचार व खेती पर प्रशिक्षण व मार्गदर्शन किया गया जिससे मैं हमेशा बीज का सदुपयोग करती हूं। मेरे को अच्छा फायदा मिलने लगा है एवं मै वाग्धारा संस्था को बहुत बहुत धन्यवाद देती हूं कि मेरे परिवार कि आजीविका बढ़ाने में मदद कि है |

गुणों की खान है लसोड़ा (गुन्दी)

हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों में पाये जाने वाला ये छोटा सा फल लसोड़ा (गुन्दी) पोषक तत्वों और औषधीय गुणों से भरपूर होता है | लसोड़ा / गुन्दी पोषक तत्वों और औषधीय गुणों से भरपूर होता है। देश के कई जगहों पर इसे गुन्दा, गोंदी और निसोरा भी कहा जाता है। इसके फल सुपारी के बराबर होते हैं। वागड़ में गुन्दी के फूलों की चटनी एवं सब्जी बनाई जाती है | कच्चे लसोड़े/गुन्दी का साग और आचार भी बनाया जाता है। पके हुए लसोड़े मीठे होते हैं तथा इसके अंदर गोंद की तरह चिकना और मीठा रस होता है। इसके पेड़ की तीन से चार जातियां होती है पर मुख्य दो हैं जिन्हें लमेड़ा और लसोड़ा कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम कॉर्डिया मायक्सा है। लेकिन तेजी से बदलते खानपान की वजह से यह लोगों से दूर होता जा रहा है। लसोड़ा / गुन्दी लसोड़ा की लकड़ी बड़ी चिकनी और मजबूत होती है। इमारती काम के लिए इसके तख्ते बनाये जाते हैं और बंदूक के कुंदे में भी इसका प्रयोग होता है। इसके साथ ही अन्य कई उपयोगी वस्तुएं बनायी जाती हैं।

औषधीय लाभ

लसोड़ा / गुन्दी के पेड़ की छाल को पानी में उबालकर छानकर पिलाने से खराब गला भी ठीक हो जाता था। इसके पेड़ की छाल का काढ़ा और कपूर का मिश्रण तैयार कर सूजन वाले हिस्सों में मालिश करने से आराम मिलता है। इसके बीज को पीसकर दाद, खाज- खुजली वाले स्थान पर लगाने से आराम मिलता है। लसोड़ा / गुन्दी में मौजूद तत्व इसमें दो फीसदी प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट,वसा, फाइबर, आयरन, फॉस्फोरस व कैल्शियम मौजूद होते हैं। गुजरात के आदिवासी लोग लसोड़ा / गुन्दी के फलों को सुखाकर चूर्ण बनाते है और मैदा, बेसन और घी के साथ मिलाकर लड्डू बनाते हैं। इनका मानना है कि इस लड्डू के सेवन से शरीर को ताकत और स्फूर्ति मिलती है। लसोड़ा / गुन्दी की छाल का काढ़ा पीने से महिलाओं को माहवारी की समस्याओं में आराम मिलता है जब आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं थीं तो लसोड़े के प्रयोग से ही कई बीमारियां दूर की जाती थीं। लगभग हर घर में लसोड़े के बीज, चूर्ण आदि रखा जाता था। जिसे जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल किया जाता था।

लसोड़ा / गुन्दी नम और सूखे जंगलों में बढ़ता है। यह हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि में होता है। जंगल के अलावा लोग अपने खेतों के किनारे पर भी इसे तैयार करते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण इसके पेड़ लुप्त हो रहे हैं। इसके बीज से पेड़ तैयार करना लगभग असंभव है। औषधीय गुणों से भरपूर इस प्रजाति के संरक्षण की जरूरत है।

****साथ ही मौसमी संक्रमण के लक्षण दिखाई देने पर हम तुरंत डॉक्टर से परामर्श कर उचित इलाज कराएं और दी गयी जानकारी का पालन करे और डॉक्टर के बयाते अनुसार नियमित दवाइयाँ लेवे ।**

संकलन एवं सहयोग : **जागृती भट्ट, बाबुलाल चौधरी** ।